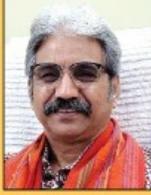


# राजनीतिक चिंतन की भारतीय दृष्टि

संपादक  
संजीव कुमार शर्मा

प्राचीन भारतीय वैदिक, औपनिषदिक, महाकाव्य तथा संस्कृत-साहित्य में सामाजिक तथा राजनीतिक चिंतन के अगण्य तत्व विद्यमान हैं, जो तत्कालीन राज्य-व्यवस्था, प्रशासनिक अभिकरण तथा राजधर्म के विभिन्न आयामों का आकर्षक एवं विस्मयकारी दृश्य उपस्थित करते हैं। प्रस्तुत पुस्तक भारतीय ज्ञान-परंपरा की अजस्र प्रवहमान स्रोतस्विनी से राजनीतिक चिंतन की भारतीय दृष्टि के तंतुओं को प्रकाशित करने का विनम्र प्रयास है।



प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा संप्रति चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में राजनीति विज्ञान विभाग में आचार्य पद पर कार्यरत हैं। महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, (बिहार) के कुलपति रहे। लगभग चार दशक से अध्यापन, अनुसंधान तथा शिक्षा-प्रशासन में संलग्न। प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन के अध्येता हैं। अखिल भारतीय राजनीति विज्ञान परिषद् के राष्ट्रीय महासचिव एवं कोषाध्यक्ष हैं।

## Get Your Copy

Supplied By:-  
General Secretary & Treasurer,  
Indian Political Science Association,  
Department of Political Science,  
Chaudhary Charan Singh University,  
Meerut - 250004.  
Published By:-  
Indian Political Science Association

Price:- 500  
Discount:- 30%

✉ officeipsa@gmail.com

🌐 www.ijps.net.in